वार्षिक 150/- रुपये | अप्रैल 2024 | वर्ष 26 | अंक 06 | पृष्ठ - 28 | मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

नूतन वर्ष वि.सं. 2081
पावन पर्व नवरात्र एवं रामनवमी की
हार्दिक मंगलकामनाएं

अविश्वसनीय, किंतु सत्य
ब्राजील में भारतीय नस्ल की गाय की कीमत चालीस करोड़

सम्पादकीय

अविश्वसनीय, किंतु सत्य

ब्राजील में भारतीय नस्ल की गाय की कीमत चालीस करोड़

कभी–कभी सम्पूर्ण ब्रह्मांड में या कहें पूरे संसार में इस प्रकार की घटनाएं घटित होती हैं, जिन पर विश्वास करना नामुमकिन– बहुत कठिन होता है। बावजूद इसके वे पूर्णता सत्य होती हैं। इसी श्रंखला में ''एक अतिशय महत्वपूर्ण घटना'' गत माह घटित हुई। इस घटना की पूरी जानकारी **राजस्थान पत्रिका** समाचार पत्र के 28 मार्च को प्रकाशित अंक में दी गई है। प्रकाशित समाचार के अनुसार ब्राजील में भारतीय नस्ल की एक गाय 40 करोड़ रुपये में बिकी है। गोवंश (प्राणियों) की नीलामी में इसे नया रिकार्ड बताया जा रहा है। यह गाय आंध्रप्रदेश के नेल्लोर की ''वियाटिना–19 एफ आइबी मारा इमोविस'' नाम की नस्ल की है। ब्राजील में नीलामी के दौरान इसे 48 लाख डालर में खरीदा गया है। ब्राजील में इस तरह की सफेद फर और आकर्षक उभरा हुआ कूबड़ (कुकुद) वाली नस्ल की गाय की बहुत डिमांड (मांग) है। इस नस्ल का वैज्ञानिक नाम **''बोस इंडिकस''** है। यह भारत की ओंगोल प्रजाति'' की वंशज है, जो ताकत (शक्ति) के लिए जानी जाती है। वास्तव में ओंगोल प्रजाति का गोवंश अधिक तापमान में भी सहजता के साथ रह लेता है। इनका मेटाबॉलिज्म मजबूत होने से इनमें किसी भी प्रकार का इन्फेक्शन नहीं होता। यह स्वयं को वातावरण (क्लाईमेट) के अनुसार ढालने में समर्थ होती है। इसलिए ब्राजील जैसे गर्म देश में भी यह सरलता के साथ जीवन–यापन करती है।

इस नस्ल को ब्राजील में जैनेटिकली विकसित किया गया है। और अब प्रयास किया जा रहा है कि आने वाले समय में इससे भी अच्छी संतान पैदा हो। प्राप्त जानकारी के अनुसार ब्राजील में इस समय 80 प्रतिशत गायें ओंगोल नस्ल की ही हैं। यह नस्ल पहली बार सन 1868 में जहाज के द्वारा ब्राजील भेजी गई थी। बतलाया गया है कि ब्राजील के विकास (भौतिक समृद्धि) में इनका सर्वाधिक योगदान है। स्मरण रहे, अनेक देश भारतीय नस्ल की गायों का अत्यधिक लाभ उठा रहे हैं, क्योंकि उन्हें इन गायों की असाधारण विशेषताएं और माहात्म्य का ज्ञान समझ में आ गया है। दुर्भाग्य से भारत जैसे आध्यात्मिक और अहिंसक (पूर्व में) राष्ट्र में गोहत्या–गोमांस भक्षण अभी भी जारी है, जो भारतमाता के ललाट पर कलंक है, जिसे किसी भी परिस्थिति में तथा हर कीमत पर मिटाया जाना अनिवार्य है। देश के सभी लोग यह भलीभांति जानते हैं– **'स्वतंत्रता'** मिलने से पहले देश के सभी कर्णधार नेताओं ने एक स्वर में कहा था कि आजादी प्राप्त होते ही सर्वप्रथम सम्पूर्ण देश में गोवंश–हत्या पर प्रतिबंध लगाने के लिए कलम की पहली नोक से पहला कानून बनाया जाएगा। बावजूद इसके आजादी मिलने के तदुपरांत देश पर एक ऐयाश व्यक्ति जवाहर लाल नेहरु (गोभक्तों के कथनानुसार) थोप दिया गया, जिसने सत्ता बचाए रखने के लोभ में मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति अपनाकर गोवंश–हत्या पर प्रतिबंध नहीं लगाने दिया, जबकि कांग्रेस के ही अनेक दिग्गज नेता गोवंश–हत्या रोकने के प्रबल समर्थक थे। यहां तक की मुस्लिम और ईसाई समुदाय भी गोवंश–हत्या रोकने का पक्षधर था।

परम गोभक्त लाला हरदेव सहाय जी ने तो कांग्रेस से त्यागपत्र देकर नेहरु के विरुद्ध गोवंश–हत्या के मुद्दे पर चुनाव भी लड़ा, दुर्योग से वह जीत नहीं पाये। हरदेव जी ने तो स्पष्टरूप से लिखा और कहा भी कि भारतमाता के ललाट पर लगे गोवंश–हत्या के कलंक के लिए केवल और केवल जवाहर लाल नेहरु उत्तरदायी–दोषी (गोद्रोही भी) हैं। घोर आश्चर्य इस बात का है कि अनेक पत्रकार, लेखक, तथाकथित नेता और मूर्ख विद्वान भी इस गोद्रोही के नाम के आगे **'पंडित'** शब्द का तमगा लगा देते हैं। इन सभी का राष्ट्रीय कर्तव्य–धर्म है कि वे देश के समक्ष सत्य को उजागर करें।

सत्य तो यह है कि गाय (गोमाता) एक ऐसा दिव्य–अलौकिक प्राणी है, जो जितना खाता है उससे अनेक गुना (बतलाना–लिखना असंभव है) अधिक मनुष्य को वापस कर देता है। आर्थिक दृष्टि से यदि विचार करें तो कहना पड़ेगा कि मनुष्य का खाना–पीना जिस पर निर्भर है, वह कृषि और वह कृषि जिस पर निर्भर है, वह गोवंश हर कीमत पर संरक्षित–संवर्धित किया जाना अनिवार्य है। वास्तव में **धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष की प्रदाता गोमाता (साक्षात् ईश्वर)** सम्पूर्ण मानव जाति के साथ–साथ पूरे ब्रह्मांड के लिए मंगलदायी और कल्याणकारी हैं। यह कहना–लिखना समीचीन होगा कि गोमाता की सेवा–रक्षा से ऐसा कुछ भी नहीं जिसे प्राप्त न किया जा सके। इसलिए देश के सभी नागरिकों का परमधर्म–कर्तव्य है के वे तन–मन–धन–समय देकर गोमाता–गोवंश की रक्षा के लिए सद्प्रयास करें। देशवासियों को भी पूर्ण विश्वास है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी अगले कार्यकाल में सबसे पहले गोवंश–हत्या पर त्वरित प्रतिबंध लगाएंगे।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 26 अंक-06 अप्रैल - 2024 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
दिनेश उपाध्याय जी
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक :
देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : जय प्रकाश गर्ग जी
मो. : 9654414174

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना

'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि

एक प्रति : रु. 15/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की गोभक्ति	04
काऊ थैरेपी का विश्वस्तर पर बढ़ता प्रचलन	08
गोमाता बनाम राष्ट्रमाता	0
सृष्टि का अतिमहत्वपूर्ण अंग है हमारा गोवंश	12
पंचगव्य से कर्कविकार का सफल उपचार	14
भारतीय संस्कृति में गाय का स्थान	16
गायों पर मिलने वाली राशि में होगी वृद्धि	18
ब्राजील में 40 करोड़ में बिकी भारतीय नस्ल की गाय	19
Integrating Cow-centric Farming Practices; Revitalizing Agriculture?	21
Gaumata	24

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर - 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

मलूक पीठाधीश्वर श्री राजेन्द्र दास जी महाराज

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की गोभक्ति

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की गोभक्ति अत्यन्त अद्भुत है। श्रीराम ने अपने राष्ट्र में गोरक्षा, सुरक्षा एवं संवर्द्धन का भार अपने हाथों में रखा। इसका तात्पर्य यह है कि राजा का कर्तव्य है कि वह सारे विभाग मंत्रियों को बांट दें किन्तु राष्ट्र के गोवंश की सुरक्षा की कमान राजा को अपने हाथों में रखना चाहिए। क्योंकि गोवंश की सुरक्षा भारतवर्ष की अर्थव्यवस्था हेतु अत्यन्त आवश्यक है।

हम श्री जगन्नाथ भगवान से प्रार्थना करते हैं कि इस देश में ऐसा अवसर अवश्य आये जब इस देश का प्रधानमंत्री गोवंश संरक्षण –संवर्धन का वीड़ा स्वयं उठा ले एवं ऐसा कानून बनाना चाहिए कि जो भी प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे उसका व्यक्तिगत विभाग गो–रक्षा, गो–संवर्द्धन हो, यह व्यवस्था होना चाहिए।

श्रीरामचन्द्रजी के राज्याभिषेक के पश्चात् उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किये। उन अश्वमेध यज्ञों में भी उन्होंने 10 हजार करोड़ गायों का दान किया, ऐसा महर्षि वाल्मीकी जी वर्णन करते हैं। *एक मात्र सनातन धर्म ही* ***'वसुधैव कुटुम्बकम्'*** *की भावना रखता है।*

हम श्री जगन्नाथ भगवान से प्रार्थना करते हैं कि इस देश में ऐसा अवसर अवश्य आये जब इस देश का प्रधानमंत्री गोवंश संरक्षण -संवर्द्धन का वीड़ा स्वयं उठा ले एवं ऐसा कानून बनाना चाहिए कि जो भी प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे उसका व्यक्तिगत विभाग गो-रक्षा, गो-संवर्द्धन हो, यह व्यवस्था होना चाहिए।

महाभाष्यकार महर्षि पतंजलि का यह कथन है कि आप जो खोजेंगे वह सनातन धर्म में मिल जायेगा। ***उपलब्धौ यत्नः क्रियताम्*** *आप केवल उपलब्धि का यत्न कीजिये। पाँच–सात विद्वान ऐसे नियुक्त होना चाहिए जो पूर्णरूप से गोव्रती हों। संसार का कोई प्रपंच उनके सिर पर न हो। वे निरंतर सनातन धर्म के वेद से लेकर सभी संस्कृतियों, सभी धर्मशास्त्रों का अत्यन्त गहन चिन्तन, मनन करें एवं उसमें सनातन धर्म के गोवंश संरक्षण–संवर्धन के जो सारभूत सिद्धान्त हैं, उन्हें खोज कर लायें।* आज समाज को इसकी अत्यन्त आवश्यकता है, क्योंकि सत्साहित्य सृजन के माध्यम से, वैचारिक क्रांति के माध्यम से, गोभक्ति–गोउपासना पर प्रवचन आदि के माध्यम से ही सम्पूर्ण जनमानस में गोभक्ति की प्रतिष्ठा संभव होगी।

सद्गृहस्थ का कर्त्तव्य तो गोवंश संरक्षण, संवर्धन के लिए संकल्पित होना ही है, किन्तु विशेष उत्तरदायित्व साधु समाज के ऊपर है। हम लोग भोज–भण्डारा खाते रहे, अपना उत्सव, महोत्सव मनाते रहे एवं गोरक्षा के ऊपर यदि हमने ध्यान नहीं दिया तो जब हम ईश्वर के दरबार में जायेंगे, भगवान पूछेंगे तुम वहाँ थे और हमारी आराध्या उपास्या, प्राणप्यारी गौओं की हत्या हो रही थी, तुमने क्या किया?तब हमसे कोई उत्तर देते नहीं बनेगा। हम अपनी इस कठोर वाणी के लिए संतों के चरणों में बारम्बार दण्डवत करके क्षमा प्रार्थी हैं; वे हमें क्षमादान करेंगे।

गृहस्थ के ऊपर अपने उद्धार के साथ ही जिस परिवार में उसने जन्म लिया उस परिवार का उद्धार करने का भी उत्तरदायित्व है। इतना ही नहीं सम्पूर्ण राष्ट्र, समाज और सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण का उत्तरदायित्व भी उस पर ही है। अतः साधु संतों को प्रमाद में नहीं जीना चाहिए कि अरे, जो हो रहा है; होने दो, हमें क्या करना, हम क्यों प्रपंच में पड़ें? हम यह नहीं कहते कि साधन–भजन छोड़ दें। साधन–भजन अवश्य करना चाहिए। यदि अपना साधन–भजन छोड़ कर आप परोपकार के कार्य में लगेंगे तो वह कार्य तो ठीक से होगा नहीं, बल्कि उसमें अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न हो जायेंगे। अतः अपनी गुरु परम्परा से प्राप्त नित्य–नियम को करते हुए, भगवान की आराधना, उपासना, नाम जप करते हुए भी हमें गोवंश संरक्षण, संवर्धन के पुनीत कार्य में अपनी आहुति देना चाहिए। आत्माहुति देना चाहिए। एक–एक साधु में भगवान के द्वारा दी गई बहुत बड़ी सामर्थ्य है, बस भीतर से तैयार होने की आवश्यकता है।

आपके समक्ष ओड़िशा के क्रियायोगी परमहंस प्रज्ञानानन्दजी महाराज उक्त कार्य में सक्रिय हुए एवं अल्प समय में ही ओड़िशा प्रदेश में आपके द्वारा क्रान्ति आ गई। ओड़िशा के सभी 30 जिलों में आपने गो संरक्षण, संवर्धन हेतु प्रचार यात्रा की। वह दिन दूर नहीं जब श्रीजगन्नाथ महाप्रभु भी पूर्ण गोव्रती हो जायेंगे। भगवान श्रीजगन्नाथ के मन्दिर में उनके धूप, दीप, नैवेद्य में भारतीय देशी गोवंश के दूध, दही, घृत का ही प्रयोग होगा, अन्य वस्तु का प्रयोग नहीं होगा। वे इस प्रकार का प्रयास भी कर रहे हैं।

आज वर्तमान समय में भगवान श्रीजगन्नाथ कलिकाल के प्रत्यक्ष ठाकुर हैं। राजा इन्द्रद्युम्न ने ब्रह्माजी के द्वारा भगवान की जो प्राण प्रतिष्ठा करायी उसके बारे में स्कन्द पुराण में लिखा है –

''प्रतिमोवाच'' आप स्वयं ग्रंथ का अध्ययन करके जान सकते हैं। हमने अब तक जितने पुराण देखे उनमें कहीं भी प्रतिमोवाच नहीं लिखा है किन्तु ***श्रीजगन्नाथजी के लिए लिखा है ''प्रतिमोवाच'' अर्थात् प्रतिमा बोली।*** इसका तात्पर्य है कि श्रीजगन्नाथजी प्रतिमा नहीं हैं, प्रतिमा होते हुए भी श्रीजगन्नाथजी साक्षात् ईश्वर हैं। सनातन धर्म शास्त्रों में वर्णित है –

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।

हम एक–दूसरे के कल्याण का चिन्तन करें। आज सारे राष्ट्र और सम्पूर्ण विश्व में जो दुःख, क्लेश, अशान्ति है, उसका कारण यही है कि हम सब अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगे हुए हैं। दूसरे का अहित हो तो कोई बात नहीं किन्तु, हमारी वासना की पूर्ति होनी चाहिए, ऐसी आज हमारी विचारधारा हो गई है। अब आप विचार कीजिये, यदि सभी प्राणी सबका हित चिंतन करने लगें, सभी का हित चाहने लगें तो फिर घी में चर्बी मिलेगी? क्या फिर दूध में डिजरजेंट मिलेगा? क्या खाद्य पदार्थों में विषैली वस्तुओं का मिश्रण होगा? हम केवल धन का चिन्तन कर रहे हैं। एक–दूसरे के सुख, स्वास्थ्य का चिंतन नहीं करते हैं। यदि सभी प्राणी एक दूसरे के सुख का चिंतन करें तो संसार दुःख से रहित हो जाये एवं सत्य तो यह है कि सबका हित चाहने वाले का ही हित होता है। जो दूसरों का हित चाहेगा, उसका स्वयं का हित होगा। जो दूसरों का हित नहीं चाहेगा उसका अपना भी हित नहीं होगा।

''मनश्च भद्रं भजतां'' हम सबका कल्याणकारी संकल्प करें। अशुभ संकल्प हमारे मन में न हो। **''मनश्च भद्रं भजतां अधोक्षये अवेश्यताम् काम्यो न विरक्तः''** अधोक्ष भगवान श्रीनारायण के चरण कमलों में हम सभी की निष्काम बुद्धि लग जाये। निष्काम भाव से हम सभी की बुद्धि श्रीजगन्नाथ महाप्रभु के चरणों में समर्पित हो जाये।

पूज्य स्वामी परमहंस प्रज्ञानानंदजी ने बताया कि आने वाले समय में सम्पूर्ण विश्व में, यूरोप में रासायनिक खादों एवं कीटनाशक छिड़काव पर प्रतिबंध लगने वाला है। भगवान कृपा करें, भारत के शासकों को सद्बुद्धि आये। वे समय से पूर्व सावधान हो जायें एवं बचे हुए भारतीय गोवंश को सुरक्षित रख लें। आज से ही गोआधारित कृषि की प्रक्रिया आरम्भ कर दें तो हम समझते हैं कि सम्पूर्ण भारत राष्ट्र, सम्पूर्ण मानवजाति के लिए एक आदर्श राष्ट्र बन जायेगा।

आज गोमांस विक्रय से उन्हें जो राशि प्राप्त हो रही है, उससे कई गुना अधिक राशि वे दूध, दही, घी का निर्यात करके प्राप्त कर सकते हैं। गोबर और गोमूत्र से बने गव्य पदार्थों का निर्यात करके प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि जो भारतीय गोवंश यहाँ सुलभ है वह यूरोप को धरती पर नहीं है। प्रत्येक क्षेत्र की जो नस्ल है वह वहाँ के लिए उपयोगी है। हर क्षेत्र की भूमि के अनुसार कुछ बीमारियाँ होती हैं। उन रोगादि को समाप्त करने की सामर्थ्य वहाँ के गोवंश में है। अतः हर क्षेत्रीय गोवंश का अपने स्थान पर महत्व है तथा जिस क्षेत्र की जो नस्ल है उस नस्ल का उसी क्षेत्र में संरक्षण होना चाहिए।

उन महानुभाव ने यह भी बताया कि अमेरिका के वैज्ञानिकों ने भी एक शोध में यह प्रमाणित कर दिया है कि फसल पर छिड़कने के लिए गोमूत्र से तैयार किया हुआ जो पदार्थ है वह कीटनाशक नहीं अपितु कीटनिरोधक है, क्योंकि फसल में कीटों का भी उपयोग है। परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि में कोई भी जीव अनुपयोगी नहीं है, सभी उपयोगी हैं। कुछ कीट ऐसे होते हैं जो फसल के लिए प्रतिकूल होते हैं एवं कुछ कीट ऐसे होते हैं जो फसल के लिए अनुकूल होते हैं।

अमेरिका के वैज्ञानिकों ने शोध करके यह प्रमाणित कर दिया है कि भारतीय देशी गाय के गोमूत्र से बना हुआ जो पदार्थ (छिड़काव) है वह कीटनाशक न होकर कीटनिरोधक है। फसल के लिए जो कीट अनुपयोगी है यह गोमूत्र का छिड़काव उनका निरोध

करता है। अतः सम्पूर्ण विश्व को सुखी एवं स्वस्थ होना है तो गोव्रती होना होगा तथा गोवंश पर आधारित कृषि करनी होगी। इसके बगैर मानवजाति सुखी एवं स्वस्थ नहीं हो सकती।

हमारे शास्त्रों में गोमाता की अनन्त महिमा गाई गयी है। वेदों में, पुराणों में, इतिहास में जहाँ भी देखिये गौ से बढ़कर और कुछ नहीं है। एक महर्षि त्रिवेणी के जल में डूब कर तप कर रहे थे। मल्लाहों ने जाल डाला तो मछली के साथ वे भी फँसकर बाहर आ गये, मल्लाहों ने उन्हें छोड़ना चाहा लेकिन उन्होंने स्वयं को उनके आधीन करते हुए कहा कि तुम मछली को पकड़कर उसे बेच देते हो तो तुम मुझे भी बेच दो, बहुत कहने पर भी जब वे नहीं माने तो यह बात राजा के पास गयी और राजा उन्हें खरीदने के लिए, धन, राज्य देने को तैयार हो गया लेकिन उस पर भी राजी न हुए। राजा ने तभी एक गाय को सामने करके कहा कि प्रभु इस गाय से क्या आपकी कीमत अधिक है। ऋषि हँस पड़े तथा राजा की बुद्धि चातुर्य पर प्रसन्न होकर कहा कि इस गाय के एक रोम के बराबर मेरी कीमत नहीं है, राजन् आपने मुझे खरीद लिया।

वसिष्ठ ऋषि ने कहा **गावः स्वस्त्ययनं महत् गौ मंगल** का परम निधान है। वैधृति, व्यतीपात, अमावस्या–जैसे कुयोग पर जन्म लेने वाली सन्तान गोप्रसव शान्ति के द्वारा निर्दोष हो जाते हैं। यह

धर्मशास्त्र का विधान है। अमंगल जन्म भी गौ की सन्निधि में मंगलमय हो जाता है, तो उस गौ से अधिक मंगलकारक प्राणी जगत् में और कौन है!

गोभिर्विपैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानषीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही।।

गौ, ब्राह्मण, वेद, पतिव्रता स्त्री, सत्यवादी, निर्लोभी पुरुष और दानशील धनी – ये सात इस धरा को धारण करते हैं। इस धरा को धारण करने में प्रथम गोमाता का ही स्थान है। जब–जब धरा पापियों के पाप से संतप्त होती है, तब–तब गौ के रूप में जाकर भगवान् अखिलेश्वर से अपने ताप को समाप्त करने की प्रार्थना करती है।

विश्व के समस्त देशों में गौ की हत्या आज अत्यन्त तीव्र गति से चल रही है, कोई भी सम्प्रदाय और धर्म इस प्रकार की जा रही गोहत्या का आदेश नहीं देता है। सैकड़ों वर्षों पूर्व जब भारत मात्र सनातनधर्मियों के तप से पल्लवित और पुष्पित होता था, मात्र ऋषियों के आदेशानुसार चलता था, उस समय गाय सभी के लिए सर्वोपरि थी। धीरे–धीरे पाश्चात्य संस्कृति का मिश्रण भारत में होने लगा, विभीषिकायें जन्म लेने लगीं, अर्थमयी बुद्धि ने धर्माधर्म का त्याग कर दिया। जब भारतभूमि पर ही गौ की रक्षा नहीं हो सकती, तो अन्य किस देश में अपेक्षा की जा सकती है? जिस प्रकार आज भी मानव मांस यदि कहीं बिकता है, तो विश्व के सभी देश एक साथ मिलकर उसकी निन्दा और उस पर प्रतिबन्ध लगाते हैं तथा उस देश के लोग भी ऐसे कृत्य को अपराध मानते हैं। मानव सभी जीवों में श्रेष्ठ है, इसलिए हम सभी सभ्य मानव ऐसा कृत्य करने से दूर रहते हैं। ठीक इसी प्रकार गाय भी अन्य सभी से श्रेष्ठ है क्योंकि मानव समाज को वह अत्यधिक पुष्ट करती है। मनुष्यों के शारीरिक एवं मानसिक बल को पुष्ट करने वाली एकमात्र गाय है। इससे अधिक और कोई जीव मानवों के इतने निकट नहीं है। तो मानव मांस की घोर निन्दा और गोमांस को व्यापारिक दृष्टि से छूट देना, उस पर प्रतिबन्ध न लगाना किस बुद्धिमत्ता का द्योतक है? क्या सारा विश्व इस बात से सहमत हो सकता है कि जब व्यक्ति बूढ़ा हो जाय तो उसे मारकर खा जाना चाहिए। क्योंकि गाय बूढ़ी होने पर भी अपने मूत्र–पुरीष विसर्जन करके वातावरण को शुद्ध करती है तथा अपने श्वास–प्रश्वास से सभी हानिकारक जीवों को नष्ट करके वातावरण को प्रदूषण मुक्त करती है। ऐसी आजन्म मानवता की सेवा करने वाली गोमाता की हत्या करना, उनका मांस भक्षण करना, उनके चमड़े से जूते तैयार करने हेतु उन्हें मर्मान्तक पीड़ा पहुंचाना कहां तक उचित है?

यदि सभी भारतीय गायों (गोवंश) की सुरक्षा के लिए दृढ़संकल्पित हो जायें तो सारे विश्व में गायों की हत्या बंद हो जाय, लेकिन शायद विश्व का भाग्य ही ऐसा है कि गाय के हत्यारूपी पाप से इसका नाश होना है? आज भारत में ही इतनी गायें कट रही हैं जिसको सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अपने आचार्यों ने प्राणपण से गायों की रक्षा करनी चाही और वे चले गये लेकिन इन राजनीतिज्ञों के कानों में जूँ तक नहीं रेंगी और स्वतन्त्रता के बाद भी पूर्व से कई गुना अधिक गायें कटने लगीं। यह भारत का दुर्भाग्य है कि हमारी गोमाता हमारे सामने ही काट दी जाती है और हम अपने घरों में बैठकर यह तर्क दिया करते हैं कि यदि काटी नहीं जायेगी तो आर्थिक हानि होगी, इससे अधिक दुर्भाग्य भारत का क्या हो सकता है?

''विश्व प्राणेश्वरी गाय'' शीर्षक रूपी पुस्तक में गाय के महत्व को वेदों और पुराणों से संकलित करके भाई ज्योति पंडित दिनेश चन्द्र जी ने जो परिश्रम किया है, वह अत्यन्त सराहनीय है। गोवंश की सुरक्षा हो, उसकी हत्या को अवध्य बताकर तुरन्त प्रतिबन्धित किया जाये, यही माँ राजराजेश्वरी, भगवान् चन्द्रमौलीश्वर से प्रार्थना है।

पूजा पाराशर, स्वतंत्र लेखिका

काऊ थैरेपी का विश्वस्तर पर बढ़ता प्रचलन

"अघ्न्येयं सा वर्द्धतां महते सौभगाय।" (ऋग्वेद १ ।१६४।२७) 'अर्थात् – अघ्न्या (गोमाता) हमारे लिये आरोग्य एवं सौभाग्य लाती हैं।' परंपराएँ स्वयं में आचार– विचार, व्यवहार और संस्कार समाए होती हैं, जो व्यक्ति के मन और तन दोनों को स्वस्थ एवं सुंदर बनाती हैं। भारतीय परंपराओं ने प्रकृति के संरक्षण से लेकर मानव कल्याण को स्वयं में समाहित किया, अतः वायु में सुगंध थी; जल में ताकत; दूध में अमृत; मिट्टी में सोना और बारिश में जीवन। परंतु धीरे– धीरे सब बदलता गया। मानवीय लालसा ने इस सुंदर प्रकृति को अपने अनुसार ढालने का पूरा प्रयास किया, जिसका परिणाम हमारे समक्ष है। सदियों से जो परंपराएँ चलती आ रही थीं, धीरे– धीरे इस आधुनिकता के कारण लुप्त होती गईं जिसके कारण दुष्परिणाम भी सामने आए। जैसे – आज व्यक्ति पहले की अपेक्षा अधिक मानसिक तनाव से जूझ रहा है। पहले व्यक्ति संतोषी था तो स्वस्थ भी, आज असंतोषी है तो अस्वस्थ। हम अपनी जड़ों से कट गए और आज छाँव की खोज में इधर–उधर भटक रहे हैं। वहीं इन परंपराओं को दूसरों ने समझने का प्रयास किया, जिसका वे आज भरपूर लाभ उठा रहे हैं।

यूरोप, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में ***'काऊ थैरेपी'*** का एक चलन शुरू हो गया है। नीदरलैंड के लोग मानसिक शांति व तनाव दूर करने के लिए ***एनिमल फार्म हाउस*** जाते हैं। इसे ***'काऊ नफलिन'*** कहा गया है, जिसका अर्थ है ***'गायों को गले लगाना'***। वे लोग फार्म हाउस जाते हैं और गायों को गले लगाते हैं, साथ ही कई घंटे गाय से सटकर बैठते हैं। यह संस्कृति, नीदरलैंड के गाँवों में शुरू हुई। अब इससे न मात्र रोगी लोग जुड़ रहे हैं अपितु सामान्य लोग भी शांति व सुकून पाने के लिए इसे अपने जीवन का हिस्सा बना रहे हैं। साथ ही वे स्वयं को गाँव से भी जोड़ रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया में भी 'काऊ थैरेपी' द्वारा तनाव और

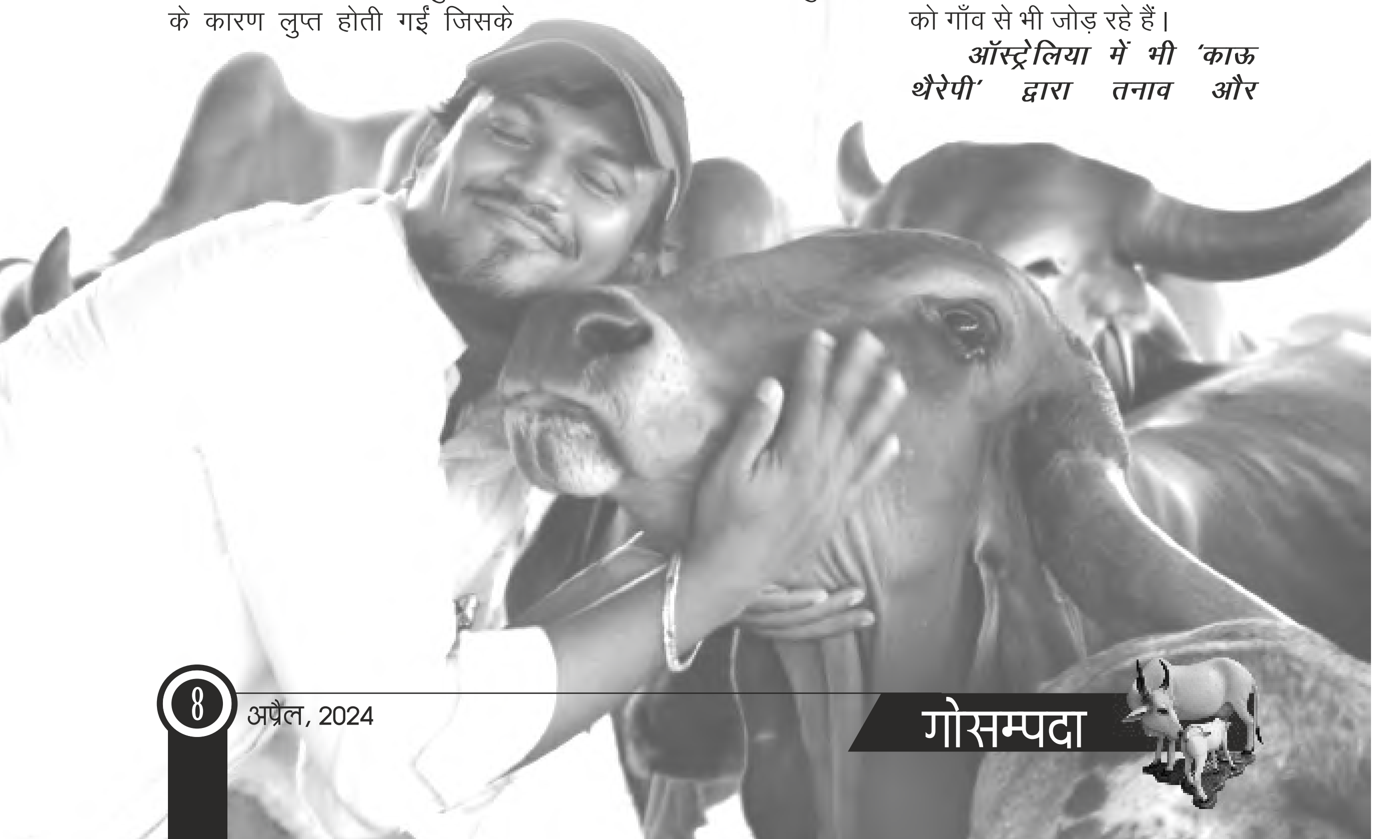

मानसिक बीमारी को दूर करने के लिए उपचार किया जा रहा है। उत्तर क्वींसलैंड में 'काऊ कडलिंग केंद्र' बनाए गए हैं। यहाँ गायों की सेवा करके और उनके साथ समय बिताकर, कई बीमारियों से राहत पाया जा रहा है। इसके लिए मात्र भारतीय नस्ल की गायों को ही चुना गया है। ऑस्ट्रेलिया में ऑटिज्म पीड़ितों के लिए इक्वाइन थैरेपी के स्थान पर 'काऊ थैरेपी' लोकप्रिय होती जा रही है।

'शोधानुसार पाया गया है कि गायों के पास बैठने और उन्हें गले लगाने से लोगों के शरीर में ऑक्सीटोसिन हार्मोन निकलता है जिसके कारण उन्हें अच्छा महसूस होता है। ये हार्मोन तब निकलता है जब व्यक्ति किसी सुखद संपर्क में आता है। ***ऑक्सीटोसिन से व्यक्ति के मन में संतुष्टि व शांति का भाव पैदा होता है। इससे तनाव भी कम होता है।*** 'एक शोधानुसार गायों की गर्दन और पीठ के कुछ हिस्सों पर हाथ फेरा गया तो वे शांत हो गईं। वे अपने पैर फैलाकर लेट गईं, साथ ही कान भी नीचे कर लिए। उस समय जो लोग वहाँ पास में उपस्थित थे, उनके मन को एक गहरा सुकून मिला। ये शोध एप्लाइड एनिमल बिहेवियर साइंस जर्नल में प्रकाशित हुआ है।'

काऊ थैरेपी

'गाय की पीठ थपथपाना और उसके साथ सटकर बैठना या उसे गले लगाना, चूमना ये सब 'काऊ थैरेपी' के अंतर्गत आता है। अगर गाय पलटकर आपको चाटती है तो वो बताती है कि आपके और उसके बीच विश्वास कितना गहरा है। गाय से सटकर बैठने वालों को खुशी मिलती है क्योंकि गाय के शरीर का गर्म तापमान, उसकी धीमी धड़कनें और बड़ा शरीर मन को शांति का एहसास देता है। सटकर बैठने से गायों को भी अच्छा महसूस होता है।' एक समय था जब हर घर में गाय होती थी। हर क्षेत्र में गौशालाएँ होती थीं। घर की पहली रोटी गाय को दी जाती थी और अभी भी दी जाती है। उसका पूजन होता था। सबसे पहले उसको प्रणाम होता था। उसे छूकर जब तक आनंदमय एहसास नहीं होता था, व्यक्ति का दिन ही प्रारंभ नहीं होता था। आज व्यक्ति इन प्राथमिकताओं से बहुत दूर, कृत्रिम जीवन की ओर बढ़ गया है। यह माना गया है, 'परिवर्तन संसार का नियम है' परंतु परिवर्तन सदैव विकास और अच्छाई के लिए होना चाहिए। ऐसा क्या परिवर्तन की जीवन को जीवंत ही न रहने दे! आज प्रकृति के संरक्षण, व्यक्ति के स्वस्थ एवं सुंदर तन–मन हेतु घर–घर में गोमाता, हर क्षेत्र में गौशालाओं का होना आवश्यक हो गया है। यही मानव जीवन और प्राकृतिक असंतुलन को स्वस्थ व संतुलित बना सकता है।

"गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चौव गवां मध्ये वसाम्यहम्।।"

"गवोपनिषद्" (महर्षि वसिष्ठ द्वारा उपदिष्ट)

'गौएं मेरे आगे रहें। गौएं मेरे पीछे भी रहें। गौएं मेरे चहुँ ओर रहें और मैं गौओं के मध्य में निवास करूँ।'

गिरीश पंकज (लेखक)

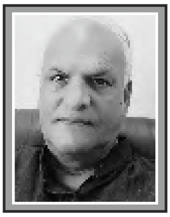

गोमाता बनाम राष्ट्रमाता

भारत एक ऐसा सनातन राष्ट्र है जो कभी गोपालन के लिए विश्व विख्यात था। प्रारंभिक काल में किसी व्यक्ति की समृद्धि इस बात से आंकी जाती थी कि उसके पास कितनी गायें हैं। त्रेता काल हो चाहे द्वापर काल, हर युग में गायों का सम्मान रहा है। मेरे जैसे साहित्य के विद्यार्थी ने तो भारतीय गायों की दुर्दशा पर पूरा उपन्यास ही लिखा है, ***'एक गाय की आत्मकथा'***, उससे भी मन नहीं भरा तो ***'गौ वंदन'*** नामक ***एक पुस्तक*** लिखी, जिसमें मेरे कुछ गौ गीत संगृहीत हैं। उसमें गौ चालीसा भी है, गौ आरती भी है। एक लेखक होने के नाते मुझे हमेशा यह चिंता रही है कि हमारी देसी गायों की हालत अच्छी रहे। लेकिन हम सब जानते हैं कि आज गायों की दशा क्या है? सड़कों पर मारी–मारी फिरती है गौ माताएं। कुत्ते घरों में शान से रहते हैं और गोमाता भूखी–प्यासी सड़कों पर भटकती रहती है। नेशनल हाइवे पर या रिंग रोड पर वे भारी वाहनों से कुचलकर मर जाती हैं या फिर विकलांग होकर मारी–मारी फिरती हैं। दुर्भाग्यजनक पहलू यह भी है कि भारत से अवैध रूप में गोमांस का निरंतर निर्यात हो रहा है। पहले से अधिक बढ़ता भी जा रहा है। यह विरोधाभास है कि एक तरफ हम सनातन का झंडा उठाए हुए हैं और दूसरी ओर गोमाता की दुर्दशा पर मौन धारण किए हुए हैं। पिछले दिनों एक संतजी ने गोहत्या के विरोध में सांकेतिक धरना दिया। मैं चकित हूं कि यह कैसा धरना था। उन्होंने सिर्फ दस मिनट का सांकेतिक धरना दिया। वे दिन भर का धरना भी दे सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। अगर उनको धरना देना ही था तो उसे व्यापक पैमाने पर एक अभियान की तरह देते। देश भर में पहले अपने शिष्यों से कहते कि हमें फलानी तारीख को इतने बजे से गोहत्या के विरोध में दस मिनट नहीं, दिन भर का धरना देना है। इस पर वे विचार करें। इस विशाल देश में

अगर गोहत्या के विरोध में वातावरण बनाना है तो दस मिनट के धरने से कुछ नहीं होगा। इसके लिए बहुत जरूरी है कि देश की राजधानी दिल्ली के जंतर–मंतर पर अखंड धरने का आयोजन किया जाये। नियमित रूप से देश भर के गोभक्त वहां जाकर धरने पर बैठें, जैसे – वर्षों पहले मुंबई के देवनार कसाई खाने के विरुद्ध विनोबा भावे द्वारा चलाए गए आंदोलन के तहत देशभर के गोभक्त आते थे और कसाई खाने के विरुद्ध नारेबाजी करके अपनी गिरफ्तारी देते थे। हालांकि वर्षों तक चलने के बाद वह आंदोलन खत्म हो गया, लेकिन अब देश में एक बार फिर राष्ट्रव्यापी आंदोलन की जरूरत है। वर्षों पहले दिल्ली में मोहम्मद फैज खान ने गोहत्या पर प्रतिबंध की मांग को लेकर आमरण अनशन शुरू किया था, जो कई दिनों तक चला। बाद में बाबा रामदेव के आग्रह पर फैज ने अनशन तोड़ा था। आज एक बार फिर इसी तरह के अनशन और आंदोलन की जरूरत है। संत जी ने यह गोहत्या को लेकर यह आह्वान अच्छा किया कि जो गोमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा देने का वादा करे, हम उसे वोट दें। यह बहुत जरूरी है और यह वादा भारतीय जनता पार्टी से करवाया जा सकता है। भारतीय जनता पार्टी भारतीय संस्कृति की बात करती है। सनातन संस्कृति की चिंता करती है, इसलिए उसका कर्तव्य है कि वह गोमाता की दुर्दशा को ठीक करने में अपनी बड़ी भूमिका अदा करे। अगर अभी चुनाव में राम जन्मभूमि पर बना मंदिर एक मुद्दा हो सकता है, तो दूसरा मुद्दा गोमाता को राष्ट्रमाता बनाए जाने की घोषणा का भी हो सकता है। कोशिश की जानी चाहिए कि भाजपानीत गठबंधन की नई सरकार जब बनेगी तो गोमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा दिया जाएगा और गोहत्या पर पूरी तरह से प्रतिबंध लागू किया जाएगा। इसके साथ ही अवैध ढंग से किये जा रहे गोमांस के निर्यात पर भी रोक लगेगी। बेशक रोक लगने के कारण अरबों रुपए की हानि होगी, जिसकी भरपाई गोवंश संरक्षण–संवर्द्धन के माध्यम से सहजता से हो जायेगी, जिसे यह देश सरलता के साथ स्वीकार भी कर सकता है। इतना ही नहीं, बल्कि गोवंश के माध्यम से देश की पूरी तस्वीर बदली जा सकती है, क्योंकि गोमाता की सामर्थ्य का अनुमान लगाना असंभव है। हमें इस बारे में गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए। भाजपा की सरकार जिन–जिन राज्यों में है, वहां गोसेवा आयोग को और गंभीरता से काम करने की जरूरत है। सरकार गौ सैनिकों की नियुक्ति करे, जो गोवंश तस्करी को रोकने का काम करें। छत्तीसगढ़ प्रदेश में पूर्व में गोठान की व्यवस्था थी। यह और बात है कि उसमें फर्जीवाड़ा होने लगा था, लेकिन वह एक अच्छी योजना थी। उसे गौ सैनिकों के हवाले किया जा सकता है। गोमूत्र और गोबर खरीदी योजना भी सुंदर योजना थी। उसको भी पारदर्शी तरीके से लागू किया जाना सार्थक रहेगा। ऐसे ही प्रयासों से गोमाता–गोवंश की रक्षा होगी और गोमाता– राष्ट्रमाता का स्वप्न साकार हो सकेगा।

आ जाओ अब कान्हा मेरे

– गिरीश पंकज

पता नहीं किस नंदनवन में ,
भ्रमण कर रहे आज कन्हैया।
इसीलिए तो लोग दुखी हैं,
मरती जाती उनकी गैया।।

बढ़ते जाते असुर यहाँ पर,
देवों का हो गया पलायन।
'गीता' को सब भूल गए हैं,
स्वार्थ का इकतरफा है गायन।
कंस रूप धर कर के नाना,
करता मानो ता–ता–थैया।।

कान्हा की मुरली की धुन में,
गऊ माता इठलाती थी।
चारा चरती थी जंगल में,
और सुखी हो जाती थी।
आज कहाँ चारा–सानी अब,
कचरा किस्मत में है भैया।

आ जाओ अब कान्हा मेरे,
असुरों का संहार करो।
नकली गौ – भक्तों को देखो,
गायों का उद्धार करो।
गाय बचे तो देश बचेगा,
कहती है तुझसे यह मैया।

हरीशंकर दीक्षित 'पथिक'

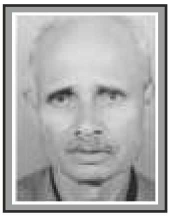

सृष्टि का अति महत्वपूर्ण अंग है हमारा गोवंश

लोकमंगलकारी गोवंश आज उपेक्षित–तिरस्कृत नाना प्रकार की कष्टप्रद यातनायें भोगता हुआ उसी प्रकार विलुप्ति की कगार तक पहुँच रहा है जैसे, गौरैय्या जैसी छोटी घरेलू पारिवारिक चिड़िया से लेकर गिद्ध जैसे बड़े पर्यावरण सहायक पक्षी विलुप्त होते जा रहे हैं।

जो गोवंश माता–पिता के समान आदर–सम्मान पाता हुआ हमारे दीर्घकालिक विकास का प्राकृतिक आधार रहा है वह दो–ढ़ाई सौ वर्ष पूर्व कलियुग में कलयुग के प्रवेश के कारण उपेक्षित–तिरस्कृत होकर मारा– मारा फिरता हुआ भूख प्यास से आकुल–व्याकुल होकर अखाद्य कूड़ा–कचरा खाता और गन्दी नाली–नालों का दूषित पानी पीता, सड़कों पर वाहनों द्वारा और खेतों की धारदार बाड़ों द्वारा चोटिल–आहत होकर तड़पता–सिसकता–कलपता हुआ मरता जा रहा है। विडम्बना यह कि गर्व से स्वयं को हिन्दू मानने–कहने वाले हम लोग इसके दुखों की अनदेखी ही नहीं कर रहे हैं, अपितु निरन्तर बढ़ाते ही जा रहे हैं। आज गोवंश के कष्ट को समझते हुए इसे दूर करने का प्रयास करने वाले लोग लगभग नगण्य हैं। जो हैं भी उनकी शक्ति–सामर्थ्य की सीमा होने के कारण इनका कष्ट दूर कर पाने में भलीभाँति समर्थ नहीं हैं।

पिंजरा पोल या सरकारी आश्रयस्थल गोवंश के दुःखों को दूर करने का उचित उपाय नहीं हैं। गोवंश का प्राकृतिक घर तो हमारा घर ही है। ईश्वर ने गोवंश की रचना समस्त जैविक रचना के

पश्चात् और मनुष्य की रचना से पहले सृष्टि कौतुक की निरन्तर सुगतिशीलता बनाये रखने वाली अपनी माया प्रकृति के सहायक रूप में की है। ऐसा हमारे आर्षग्रन्थों का निष्कर्ष है।

हमारे पूर्वज ऋषियों के अनुसार प्रकृति की शक्ति पर्यावरण है। इसी शक्ति के आधार पर वह सृष्टि को गतिशील बनाये रखने का कार्य करती रहती है। पर्यावरण के (मृदा, जल, वायु, ताप और आकाश) अंगों की स्वच्छता–पवित्रता बनाये रखने का कार्य गोवंश द्वारा सम्पन्न होता है और मनुष्य की रचना गोवंश की रक्षा–पालन–पोषण करते हुए इसकी शक्ति–सम्पदा का समुचित उपयोग करते हुए अपना जीवनयापन करने हेतु की गई है।

जब तक हम पूर्वजों के उपदेशानुसार आचरण करते रहे तब तक हमारा सद्भाव अभाव में भी बना रहा। कलयुग के प्रवेश ने कलियुग को दुष्प्रभावित कर मनुष्यों को दिग्भ्रमित कर नितान्त स्वार्थी

तथा विलासप्रिय बना दिया। आज हम विलासमदमाते लोग अपना विवेक खोकर मातृ– पितृवत आदरणीय गोवंश को अपार कष्ट अपनी विलासप्रियता के वशीभूत होकर दे रहे हैं। हमारा यह कदाचार हमारी भावी सन्तति के लिए अति घातक है; जिनके लिए हम प्रकृति माता तक को नोच–खसोटकर धन संग्रह करने में रत हैं। हमारी मूर्खता ही तो है कि हम जिस भावी–सन्तति हेतु अनुचित रूप से धन संग्रह कर रहे हैं उसी के भाग को प्रकृति माता से छीन ही नहीं नोच–खसोटकर स्वयं उपभोग कर रहे हैं, वह भी विलास के लिये। वातानुकूलित कारें तथा राजमहल से भी भव्य सुन्दर वैलासिक सुविधा सम्पन्न वातानुकूलित आवास हमारी अनुचित विलासिता का उदाहरण ही तो है।

प्रकृति के प्रति ऐसे कृतघ्नतापूर्ण व्यवहार का कारण गोमाता के प्रति हमारी प्राकृतिक भावना में परिवर्तन है, जो मशीनी बाजार की देन है। इस बाजार ने पहले हमें विलासिता की डोर से बाँधा और फिर बन्दर की भाँति अपने इंगित पर नचाना प्रारम्भ किया। हम विलास मदमाते होकर नाचते–नाचते अपनी ही भावी सन्तानों के भाग को प्रकृति माता से बलात् छीनकर, नोच–खसोटकर स्वयं भोगने लगे। यही नहीं प्रकृति माता के भण्डार में विष तक भरने लगे। यह दुष्कृत्य वे कर रहे हैं जिनके पूर्वज गौ–धरती और प्रकृति को माता समान आदरणीय– पूजनीय मानकर सेवा–पूजा करते थे और इनके द्वारा अन्न–फल, दुग्धादि पदार्थों को प्रसाद रूप में प्राप्त कर अपना जीवनयापन करते थे।

आधुनिक अनावश्यक उपभोगवादी अर्थशास्त्र वस्तुतः अनर्थशास्त्र है। यह उन चन्द मानवता विरोधी देशों के संगठन का सामूहिक ऐसा मकड़जाल है जिसने संसार के लगभग समस्त देशों को तीव्र आर्थिक विकास की अन्धी दौड़ में सम्मिलित होकर दौड़ने को विवश कर दिया है। एक ऐसी दौड़ में जो विनाश की गहरी खाई की ओर समस्त संसार को ले जा रही है। इस खाई में इनका गिरना भी तय है। बचेंगे केवल वे ही देश जिनका विवेक खाई में गिरने से पूर्व जाग्रत होकर इस अन्धी दौड़ में उनकी आँखें खोल देगा। हमारा देश इस अन्धी दौड़ में अपनी आँखों को खोलकर सचेत हो रहा है। सूर्य शक्ति का समुचित उपयोग करने का प्रयास और संसार को भी ऐसा करने हेतु प्रेरित करना इस बात का प्रारम्भिक बिन्दु माना जा सकता है।

अब समय आ गया है कि हमारे प्रधानमंत्री जी गोशक्ति–सम्पदा का समुचित उपयोग करने हेतु वातावरण बनाते हुए गोवंश आधारित कृषि तथा कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देने का कार्य अपने अगले कार्यकाल में करें। यह कार्य थोड़ा कठिन तो है किन्तु परम्परागत कृषि तथा कुटीर उद्योग के यन्त्रों में सुधारकर इन्हें उन्नत कर किया जा सकता है। हमारी देखा–देखी अनेक छोटे देश भी ऐसा करेंगे और इस प्रकार हमारे गोवंश को उसका आदर, सम्मानयुक्त स्थान फिर से प्राप्त होगा। सन्तुष्ट गोवंश के आशीर्वाद से ग्रामीण बेरोजगारी दूर होकर हमारे देश में सुख–शान्ति और समृद्धि का वातावरण निर्मित होगा। ऐसा होने से धरती और प्रकृति माता का शुभाशीष और संसार को लोकमंगल मार्ग दिखाने का गौरव भी हमें प्राप्त होगा।

एक अनुभव

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

पंचगव्य से कर्कविकार का सफल उपचार

लगभग दो साल पूर्व की घटना है जिसमें एक आपसी व्यक्ति को Lymphatic Malignancy होने की सूचना प्राप्त हुई। विविध प्रकार की जांचें चलरही थीं। रिपोर्टस् मिलने में चार–छः दिन लगने वाले थे। पहले तो Lymphnode का T.B. हुआ होगा, ऐसा लगा। लेकिन परीक्षणोपरान्त T.B. नहीं थी। दूसरी संभावना कैन्सर की थी। दुर्भाग्यवश यही सही निकली। Biopsy भी दो बार करनी पड़ी। निश्चित निदान करते करते समय गुजर रहा था। परीक्षण पूर्ण होने के पश्चात् ही चिकित्सा का विषय आता है। परिवार में अलग भय का वातावरण सभी को सता रहा था। दुनिया भर में इस बीमारी का क्या–क्या इलाज कहाँ–कहाँ होता है। यह ढूंढना शुरू हुआ।

रुग्ण को सीने के दाहिने हिस्से में वेदना होना, इतना ही शुरू हुआ था। शुरूआत में वजन कुछ कम होने लगा था, लेकिन थोड़ा मोटापा होने के कारण वह उन्हें ठीक लग रहा था। वेदना के कारण ही वे डॉक्टर के पास पहुंचे थे। सामान्य जाँच दवाई से आराम न होने के कारण विशेष परीक्षण तक जाने की आवश्यकता लगी। रक्त परीक्षण, X-ray, MRI, Scan हुआ। Biopsy का नाम सुनते ही मन विचलित होना अत्यंत स्वाभाविक था। परिचित होने के कारण उन्हें पंचगव्य के Research की जानकारी थी।

CSIR की एक प्रयोगशाला NEERI नागपुर में है। पंचगव्य के अनेक शोध वहाँ हुए, पेटेंट भी प्राप्त हुए हैं। उस शोध कार्य में ध्यान में आया की कर्क कोशिकाओं को कामधेनु गोमूत्र अर्क के साथ Exposure दिया जाए तो अलग–अलग अवस्था में अलग Cell Reaction देखने को मिली है। उस प्रयोग के दौरान कैन्सर सेल को Cow Drug का Regular Treatment का Exposure दिया जा रहा था। एक प्रयोग में कीमो शुरू करने के पूर्व कामधेनु गोमूत्र अर्क का Exposure दिया गया।

दूसरे समय कीमो के साथ कामधेनु गोमूत्र अर्क साथ में प्रयोग

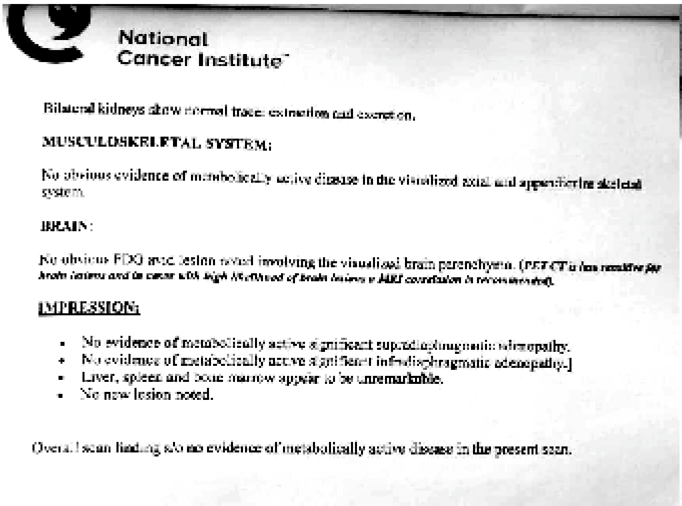

National
Cancer Institute™

Bilateral kidneys show normal tracer extraction and excretion.

MUSCULOSKELETAL SYSTEM:

No obvious evidence of metabolically active disease in the visualized axial and appendicular skeletal system.

BRAIN :

No obvious FDG avid lesion noted involving the visualized brain parenchyma. (*PET-CT is less sensitive for brain lesions and in cases with high likelihood of brain lesions a MRI correlation is recommended*).

IMPRESSION:

- No evidence of metabolically active significant supradiaphragmatic adenopathy.
- No evidence of metabolically active significant infradiaphragmatic adenopathy.]
- Liver, spleen and bone marrow appear to be unremarkable.
- No new lesion noted.

Overall scan finding s/o no evidence of metabolically active disease in the present scan.

रुग्न की रिपोर्ट – 01

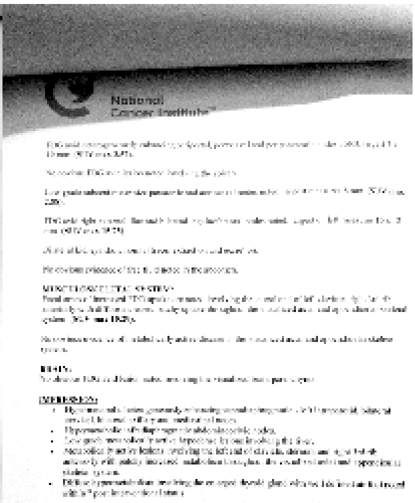

National
Cancer Institute™

रुग्न की रिपोर्ट – 02

हुआ। तीसरे Group को पहले कीमो दिया गया। तदुपरान्त कामधेनु गोमूत्र अर्क का Exposure दिया गया। उपरोक्त तीनों प्रयोगों में से सबसे पहले की अवस्था में कैन्सर कोशिकाओं पर कामधेनु गोमूत्र अर्क का सबसे अच्छा प्रभाव प्राप्त हुआ। Cancer Cell इस विधि में सबसे अधिक संख्या में खत्म हुए।

इस आधार पर अगर कोई कैन्सर का रुग्ण हमारे दवाखाने में पूर्वावस्था में आता है तब उन्हें औषधि उनकी सहमती के आधार पर पहले भी लेने के लिए बताई जाती है। अगर वे लेते हैं तब तो उनका अभ्यास किया जा सकता है। अलग अलग कैन्सर के रुग्ण हमारे पास अलग– अलग अवस्था में आते हैं।

उपरोक्त रुग्ण Biopsy की रिपोर्ट आने के पूर्व ही हमारे दवाखाने में सलाह लेने आया। अभी उनकी औषधि योजना शुरू होने में कम–से–कम दस से बारह दिन का समय रिपोर्ट आने तथा सब तय होने तक का लगने वाला था। उनकी रिपोर्ट में संशय आने के कारण समय और भी अधिक लगा। उस समय गोविज्ञान अनुसंधान केद्र, देवलापार के चिकित्सकों द्वारा बताई गई औषधि का उन्होंने विधिवत् सेवन किया। उसमें लगभग अठारह दिन निकल गए। तदुपरान्त कीमो की शुरूआत हुई, तब उन्हें सिर्फ लघूसूतशेखर एवम् पंचतिक्त घृत ही दिया जा रहा था। जनवरी से जून 2022 तक संपूर्ण कीमो के पांच दिन के छः क्रम इक्कीस दिन के अंतराल में पूरे किए गए। तीसरे एवम् चौथे कीमो के बीच में Reports में खून में गड़बड़ी दिखने के कारण अंतराल अधिक रहा। अब प्रत्येक छः मास के अंतराल में जांच, PET Scan आदि जारी है।

उनके शरीर की स्टेज फोर कैन्सर की अवस्था से आज वर्तमान में वे संपूर्ण रूप से ठीक हैं। उनका बीच–बीच में पंचगव्य द्वारा पंचकर्म भी आवश्यकता अनुसार किया जाता है। मौखिक औषधि भी दी जारही है। साथ में दोनों चिकित्सकों का परामर्श परहेज इत्यादि भी जारी है। अतः चिकित्सक के विचार विनिमय एवम् देखरेख में ही औषधि सेवन करें।

शारदा मेहता (लेखिका)

गाय एक बहु उपयोगी प्राणी है। सनातन धर्म में गाय को बड़ा ही सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। वह माता के समान पूजनीय है। हमारे देश के निवासी तो गाय के प्रेमी हैं ही, भगवान भी गाय को अत्यधिक प्रेम करते हैं। द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण का धेनु प्रेम प्रसिद्ध है ही। बाल्यावस्था से ही श्रीकृष्ण ग्वाला बनकर गाय चराने के लिए जंगल में जाने की हठ करते थे। कई महान कवियों ने कृष्णजी के ***धेनु प्रेम*** को अपने ग्रन्थों का प्रमुख विषय बनाया है। कवि रसखान तो अपने काव्य में लिखते हैं–

जो पसु हौं तो कहा बस मेरो,
चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।

कवि रसखान प्राणी योनि में नन्दजी की गायों के मध्य गाय

भारतीय संस्कृति में गाय का स्थान

बनकर जंगल में गायों के साथ घास भक्षण करना चाहते हैं। पूतना वध के पश्चात् गोपियाँ घबरा गईं कि छोटे से कन्हैया को पूतना की बुरी नजर लग गई होगी, अतः वे गंगी नामक गाय की पूँछ से श्रीकृष्णजी की नजर उतारती हैं। गोपियों ने कन्हैया के सिर से पैर तक तीन बार गाय की पूँछ घूमा दी जिससे नजर उतर जाय। पूतना राक्षसी की कुदृष्टि से बचाने के लिए कन्हैया को गोमूत्र से स्नान कराया गया। गोबर भी मला गया जिससे पूतना के कीटाणु नष्ट हो जाएं। गाय के गोबर और गोमूत्र में कीटाणुओं को नष्ट करने की शक्ति होती है।

राजा दिलीप ने संतान प्राप्ति के लिए नन्दिनी गाय की सेवा की थी। नन्दिनी ने राजा की परीक्षा ली और प्रसन्न होकर राजा को सन्तान प्राप्ति का वर दिया। गाय का प्रसन्न मन से दिया हुआ वरदान कभी निष्फल नहीं होता है। भारतीय घरों में तो आज भी गोपूजन तथा गोवर्द्धन पूजन का महत्व है। आज भी प्रत्येक घर में गाय को पहली रोटी निकाल कर उसे खिलाया जाता है। आदत होने पर गाय प्रतिदिन आकर दरवाजे पर रंभाती है और रोटी खाकर चली जाती है। प्राचीन समय में ऋषि मुनि के आश्रमों में असंख्य गायें रहती थीं, जहाँ विद्यार्थीगण उनकी सेवा सुश्रूषा करते थे। परशुरामजी के पिताजी जमदग्नि के आश्रम में गायों को लेकर युद्ध जैसी स्थिति निर्मित हो गई थी।

प्राचीन समय में कन्याओं के विवाह के शुभ अवसर पर कन्या दान में गायें दी जाती थीं। गोदान सबसे बड़ा दान माना जाता था। उन गायों से उत्पन्न बछड़ों का

कृषि कार्य में उपयोग किया जाता था। गायों का क्रय–विक्रय में मुद्रा के रूप में प्रयोग किये जाने का उल्लेख भी प्राप्त होता है। गायों को देकर इच्छित वस्तु क्रय कर ली जाती थी। आधुनिक वैज्ञानिक गाय के दूध का परीक्षण कर रहे हैं। परीक्षण से यह सिद्ध हो चुका है कि गाय के दूध में अनेक गुण हैं। यह कोशिकाओं की टूट फूट की क्षतिपूर्ति करता है। बुद्धि का विकास करता है। इससे रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास होता है। गाय के दूध में पथरी को नष्ट करने की क्षमता होती है। वैज्ञानिकों का कथन है कि यदि बालों को गाय के दूध से धोया जाए तो बाल सफेद नहीं होते हैं। गाय के दूध से निर्मित घी से यदि हवन किया जाए तो उससे आसपास के वातावरण के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। गाय के गोबर से निर्मित कंडे (उपले) में यह शक्ति होती है कि वह शरीर के लिए घातक मोबाइल से निकलने वाली किरणों को नष्ट कर देते हैं।

गाय के दूध, दही, गोमूत्र, छाछ, गोबर, घी आदि के साथ ही गाय की चमड़ी और सींग भी उपयोगी हैं। इससे कई प्रकार की वस्तुएँ निर्मित की जाती हैं, यथा जूते, पर्स, खिलौने, सजावटी वस्तुएँ आदि। ये वस्तुएँ भारत में ही नहीं विदेशों में भी लोकप्रिय हैं। इनसे विदेशी मुद्रा प्राप्त की जाती है। गाय जैसे निरीह प्राणी की हत्या निर्ममता के साथ की जाती है, जो हमारी सनातन संस्कृति के प्रतिकूल है। शासन भी इसे रोकने के लिए कटिबद्ध है। जनता को भी आगे आकर इस गोहत्या का विरोध करना चाहिए।

कई लोग असावधानीवश खाद्य सामग्री को पॉलीथिन की थैलियों में भरकर फैंक देते हैं। मूक प्राणी उस खाद्य सामग्री का भक्षण करने के साथ ही उन पॉलीथिन की थैलियों का भक्षण कर लेते हैं जो उनकी जीवन लीला समाप्त करने में सहायक होती है। उनके पेट में गाँठ बन जाती है। दूध कम आने लगता है। धीरे–धीरे उन्हें उदर संबंधी कई रोग हो जाते हैं जो उनकी मृत्यु का कारण बनते हैं। हमें अपने आपको सुधार कर खाद्य सामग्री पॉलीथिन थैलियों में नहीं फेंकना चाहिए। इन निरीह प्राणियों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। गाय को हमारे देश में माता का स्थान प्राप्त है। प्लास्टिक थैलियों पर प्रतिबन्ध तो लग चुका है, परन्तु कालाबाजारी में ये प्राप्त होती हैं। यदि गाय को बचाना हो तो उसे प्लास्टिक खाने से रोकना होगा।

गौशालाओं में तथा ऋषियों के आश्रमों में गायों की स्वच्छता तथा पशु आहार का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है। गायों का शुद्ध दूध भी वहाँ से प्राप्त होता है। ऐसी गोशालाओं को पुरस्कृत किया जाना चाहिए, जिससे उनमें प्रतिस्पर्धा की भावना जाग्रत हो और वे प्रोत्साहित हों। गाय माता अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे, घर में गोपूजन हो और गाय को प्रतिदिन रोटी सर्वप्रथम खिलाएं। यह परम्परा निरन्तर बनी रहे क्योंकि गाय माता के शरीर में तैतीस कोटी देवी–देवता का निवास करते हैं।

गायों पर मिलने वाली राशि में होगी वृद्धि

- गोभक्त मुख्यमंत्री मोहन लाल यादव जी

गोरक्षा संवाद गोवंश एवं गौशाला के बेहतर प्रबंधन पर कार्यशाला का आयोजन कुशा भाव ठाकरे सभा ग्रह भोपाल में किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में गोमाता और गोवंश के संरक्षण के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। गौशालाओं के बेहतर संचालन के लिए उन्हें दी जा रही राशि में वृद्धि की जाएगी। गोरक्षा संवाद निरंतर होता रहेगा। इस विषय पर विचार—विमर्श की प्रक्रिया जारी रहेगी, ताकि गायों और गोशालाओं के बेहतर प्रबंधन के उपाय किये जा सकें। प्रदेश में चरनोई की भूमि पर अतिक्रमण हटाने, प्रति 50 किलोमीटर पर सड़कों पर दुर्घटना का शिकार हुई गायों को इलाज के लिए भिजवाने और सड़कों पर बैठने वाले पशुधन को बैठने से रोकने या अन्यत्र स्थानांतरित करने के लिये आधुनिक उपकरणों की सहायता ली जायेगी। गायों के लिए चारा काटने के उपकरणों पर अनुदान की व्यवस्था की जायेगी। पंचायतों को आवश्यक सहयोग और प्रेरणा मिले, इसके लिए गौ—संवर्धन बोर्ड प्रयास करेगा। गायों के लिए गौशालाओं को प्रति गाय की राशि 20 रुपए से बढ़ाकर 40 रुपए प्रदान की जायेगी।

अधूरी गोशालाओं का निर्माण कार्य पूर्ण किया जायेगा। नई गौशालाएं भी बनेंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज कुशा भाऊ ठाकरे सभागृह में मध्यप्रदेश में गौशालाओं के बेहतर प्रबंधन पर आयोजित हितधारकों की कार्यशाला गोरक्षा संवाद के समापन सत्र को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आगे कहा कि गोपालक ही गाय का महत्व समझता है। हमारे देश में गाय पालना, गौशाला चलाना पवित्र कार्य है। गौशाला संचालन से ज्यादा बेहतर काम यह है कि घर में ही गोपालन किया जाये। यदि पर्याप्त जगह है तो गाय अवश्य पालें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उनके परिवार में भी गाय पालने की पुरानी परम्परा है। आज भी बयोवृद्ध पिता बूढ़ी गायों की सेवा करते हैं। गाय को माँ स्वरूप मानते हैं। गौपालक परिवार यदि गाय के दूध का उपयोग करता है तो सेवा में भी पीछे नहीं रहना चाहिये। पंचायत एवं ग्रामीण विकास, श्रम मंत्री प्रहलाद पटेल ने कहा कि वे स्वयं गोपालक हैं। इसलिये इस कार्यशाला से उनका विशेष जुड़ाव है।

कार्यक्रम का सफल संचालन पशुपालन आयुक्त डॉक्टर आर एस मेहिया के द्वारा किया गया। सर्वप्रथम गोमाता का पूजन और कन्याओं का पूजन वैदिक मंत्र उच्चारण के बीच किया गया। इसी दौरान संरक्षक परम पूज्य स्वामी श्री कृष्णा नंद जी महाराज, गो एवं गोशाला उत्थान संघ के प्रदेश अध्यक्ष राधेश्याम विश्वकर्मा, प्रदेश महामंत्री गोपाल अग्रवाल, मीतेश अहीर, राजेश जी देसाई, प्रदेश संगठन मंत्री भूपेंद्र शर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष भगवान सिंह गोड, जीसीसीसी आई के संस्थापक डॉ वल्लभभाई कथारिया जी आदि इस अवसर पर उपस्थित थे। यह जानकारी गो एवं गोशाला उत्थान संघ के प्रदेश मीडिया प्रभारी पत्रकार अंकित दुबे ने दी है।

ब्राजील में 40 करोड़ में बिकी भारतीय नस्ल की गाय

नई दिल्ली। भारत में गायों की औसत कीमत पांच हजार से 15 हजार रुपए है, लेकिन ब्राजील में एक गाय 40 करोड़ रुपए में बिकी है। गोवंश की नीलामी में इसे नया रिकॉर्ड बताया जा रहा है। गाय आंध्र प्रदेश के नेल्लोर की 'वियाटिना–19 एफआइवी मारा इमोविस' नाम की नस्ल की है। ब्राजील में नीलामी के दौरान इसे 48 लाख डॉलर में खरीदा गया। सफेद फर और कंधों पर विशिष्ट बल्बनुमा कूबड़ वाली यह गाय भारत की मूल निवासी है। ब्राजील में इस नस्ल की काफी डिमांड है। नस्ल का वैज्ञानिक नाम 'बोस इंडिकस' है।

वैज्ञानिकों के मुताबिक यह भारत के ओंगोल मवेशियों की वंशज है, जो अपनी मजबूती के लिए जानी जाती है। यह खुद को पर्यावरण के हिसाब से ढाल लेती है। यह नस्ल पहली बार 1868 में जहाज से ब्राजील भेजी गई थी। साठ के दशक में कई और गायों को वहां ले जाया गया था।

मौसम के अनुकूल ढल जाती है

ओंगोल नस्ल के मवेशी काफी गर्म तापमान में भी रह सकते हैं। इनका उपापचय (मेटाबॉलिज्म) मजबूत होने से इनमें किसी तरह का इंफेक्शन नहीं होता। ब्राजील में जमकर गर्मी होती है। इसलिए वहां यह गाय काफी पसंद की जाती है। वहां के लोग इसे आसानी से पाल सकते हैं।

जैनेटिकली तौर पर विकसित किया गया

इस नस्ल को जैनेटिकली तौर पर और विकसित किया गया है। इससे ऐसी संतान उत्पन्न होने की संभावना है जो इससे भी बेहतर होगी। ब्राजील में करीब 80 फीसदी गायें ओंगोल नस्ल की हैं।

पुलिस टीम पर फायर कर गोवंश तस्कर फरार

जौनपुर। मड़ियाहूं थाने की पुलिस ने गोहत्या के लिए ले जा रहे आठ गोवंश को पिकअप सहित बरामद किया, जबकि चालक और गोवंश तस्कर पुलिस पर फायर करते हुए फरार हो गए। अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण शैलेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि प्रभारी निरीक्षक मड़ियाहूं को सूचना मिली थी की मछलीशहर की तरफ से एक पिकअप में गोतस्कर गोवंश लेकर जा रहे हैं। सूचना पर तत्काल थाने की फोर्स को अवगत कराते हुए जैसे ही वे लोग मेजा के पास पहुंचे, एक पिकअप आता दिखाई दिया। पिकअप वाले को रोकने का प्रयास किया गया तो पुलिस वालों पर पिकअप चढ़ाने का प्रयास किया और असलहे से फायर किया। पिकअप तेज रफ्तार से जा रही थी कि उसकी कमानी टूट गई और गाड़ी एक तरफ झुक कर रुक गई। पिकअप ड्राइवर व उसके साथी फयर करते हुए पिकअप छोड़कर भाग गए।

25 हजार का इनामी गोवंश तस्कर पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार

औरैया। दिबियापुर क्षेत्र में हुई मुठभेड़ में पुलिस ने 25 हजार रुपये के इनामी गोवंश तस्कर को गिरफ्तार किया है। मोहल्ला कुरैशियान निवासी समीर उर्फ राजा पुत्र साबिर पिया गैंगस्टर व हिस्ट्रीशीटर गोकशी में संलिप्त था।

नूतन वर्ष, पवित्र-पावन पर्व नवरात्र एवं रामनवमी की सभी देशवासियों को हार्दिक मंगलकामनएं

श्रवण कुमार वघेल

(प्रधान प्रतिनिधि) ऊमरी, नगला जैत, चंदौस (उ.प्र.) 202132

गोमाता के लिए प्रति वर्ष पाँच बीघा का भूसा गोशाला को दान करते हैं और जिस जगह कोई भी गोमाता चोटिल मिलती हैं तो स्वयं दवा व पट्टी भी करते-कराते हैं। इस प्रकार सभी व्यक्ति गोमाता-गोवंश की सेवा करें तो कोई भी गोवंश कष्ट में नहीं रहेगा और सेवा करने वाले सभी लोगों पर उनकी कृपा बरसेगी।

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

INTEGRATING COW-CENTRIC FARMING PRACTICES; REVITALIZING AGRICULTURE

The vast natural realm proffers us with a cornucopia of resources to delve into and harness yet our imprudent conduct towards it has resulted in the heedless exploitation of these endowments. Regrettably, we are now laden with the dire consequences of our actions. One of the most disconcerting apprehensions pertains to the excessive and unbridled utilization of agricultural chemicals which yields toxic crops. Though the immediate impact of these chemicals on human health may not be overt, they can infact lead to severe and incapacitating maladies over time. Pesticides in particular are notorious for their carcinogenic, teratogenic and tumorigenic attributes.

Research has incontrovertibly demonstrated that agrochemicals augment the risk of various cancers such as Leukemia, Lymphoma, Brain, Kidney, Breast, Prostate, Pancreas, Liver, Lung and Skin etc. The escalated incidence of cancer among farmers and agricultural workers in Punjab and Haryana serves as tangible evidence of this observable fact. Farmers, workers, residents and consumers involved with them are persistently exposed to pesticides through their daily activities particularly in rural areas. As a result they are more susceptible to the detrimental effects of these chemicals. Therefore, Natural Farming is the sole viable solution if we aspire to secure a wholesome and prosperous future for posterity. In this

context, Natural Farming is the only alternative remaining that can propel us towards better health and growth.

Nutrition Management In Natural Farming

Research has unequivocally demonstrated that the proper management of plant nutrition is of paramount importance for their optimal growth and development. A total of 16 essential nutrients are required by plants and any deficiency in these nutrients can significantly impact crop yield. Plants obtain Carbon, Hydrogen and Oxygen from the air and water while major nutrients like Nitrogen, Phosphorus and Potassium (NPK) are obtained from the soil. Secondary or trace nutrients such as Calcium, Magnesium and Sulphur are required in small amounts whereas micronutrients like Iron, Zinc, Manganese, Copper, Boron, Molybdenum and Chlorine are crucial for plant growth and development and are needed in significant quantities.

The activity of microorganisms in the soil can be boosted by incorporating green manure, compost, vermicompost and other organic fertilizers into the soil before planting,. This leads to approximately 78% of atmospheric nitrogen being fixed by free bacteria present in the soil. These bacteria can provide the necessary nitrogenous fertilizers required by plants while PSB Bacteria (Phosphate Solubilizing Bacteria) can help to meet the phosphorus requirements. As a result, farmers can minimize their reliance on phosphorus-based fertilizers. This natural approach ensures that all the essential elements for plant growth and development are readily available during the initial stages of crop growth.

Indigenous cow with humps, the mainstay of natural farming

Natural farming relies heavily on the indigenous cow, specifically those with characteristic humps as a cornerstone. This is due to the copious amounts of bacteria present in their dung which aid in the natural nourishment of plants. In addition cow urine contains mineral salts that provide the necessary micro-elements for plant growth. Bio-regulators produced from cow dung and urine are utilized for seed purification, soil purification and standing crops which provide crops with essential nutrients resulting in increased production. Overall the desi cow serves as the primary foundation of natural farming, an ancient agricultural method that preserves the natural state of land without relying on harmful chemical pesticides.

Utilizing Bio-regulators:

To guarantee crops receive a balanced nutrient supply it's recommended to use bio-regulators like Panchagavya, Jeevamrut, Beejamrit, Amrut Pani and vermi wash prepared with cow dung and urine at specific intervals. These bio-regulators also increase earthworm numbers in soil which improves fertility, soil softness, water retention, plant root depth and crop protection from strong winds.

Disease and pest control:

Bio-regulators boost plant resistance preventing the spread of maladies and eradicating disease-causing microorganisms.

Bio-pesticides derived from composted inedible plant matter like Neem, Datura and Madar effectively combat insect infestations.

Use of crop residues

Soil health experts express growing concern over the depletion of soil organic carbon. The optimal amount of organic carbon in soil should be at least 1 percent, but it has been decreasing to an alarming 0.3 to 0.4 percent. Adhering to the aforementioned guidelines is crucial to combat this. Crop residues should be decomposed in the respective lands themselves, and burning should be avoided as it destroys vital nutrients and raises soil temperature, killing microorganisms and other friendly organisms. Sustainable farming practices are vital to the environment as a whole.

To augment the soil's organic carbon content, organic matter incorporation through green manuring, vermicomposting and composting practices can be employed. Organic fertilizers like cow dung and urine can enrich soil organic carbon content. Crop residues must not be burnt and instead incorporated in the soil. Moreover, crop rotation and intercropping can aid in preserving soil health and fertility. Periodic soil testing can monitor organic carbon content and nutrient status and identify potential deficiencies that warrant attention.

राम से प्रेम

इस संसार में कोई ऐसा प्राणी नहीं है जिसके हृदय में प्रेम न हो। संसार के सभी प्राणी किसी न किसी रूप में आपस में प्रेम जरूर करते हैं, लेकिन प्रेम करने के सोच, चिंतन, अभिलाषा एवं स्वरूप में अंतर होता है। कोई धर्म से तो कोई अधर्म से, कोई सत्य से तो कोई असत्य से, कोई झूठ से तो कोई सच से, कोई पाप से तो कोई पुण्य से, कोई बुराई से तो कोई अच्छाई से, कोई सद्गुण से तो कोई दुर्गुण से, कोई सत्कर्म से तो कोई दुष्कर्म से, कोई भक्ति से तो कोई आसक्ति से, कोई लोभ से तो कोई त्याग से, कोई काम से तो काई राम से, कोई ब्रह्म से तो कोई माया से प्रेम करता है, लेकिन किससे प्रेम करे कि यह दुर्लभ मानव जीवन सफल हो और जीवन में सुख–शांति एवं परमानंद की प्राप्ति हो। इस विषय पर विचार करने से प्रेम की सार्थकता सिद्ध होती है, क्योंकि मनुष्य का जन्म प्राप्त होना दुर्लभ है।

यह संसार भवसागर है। भवसागर से पार होने के लिए भगवद्भक्ति अतिआवश्यक है। अगर मनुष्य तन प्राप्त करके भगवद्भक्ति नहीं किया तो पुनः 84 लाख योनियों में भ्रमण करना पड़ता है। अतः भगवान से प्रेम करना मानव जीवन का प्रमुख उदेश्य है। ईश्वर प्राप्ति जीवन का सबसे प्रमुख लक्ष्य है। इसी के लिए जप, तप, ध्यान, सत्संग, पूजा–पाठ, यज्ञ किए जाते हैं, जो ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में सहायक सिद्ध होते हैं। इनसे मन का शुद्धिकरण होता है। पाप–ताप, दोषों का परिमार्जन होता है। प्रभु के प्रेम में उत्पन्न होने वाली बाधाएं समाप्त होती हैं। मन सतोगुणी बनता है।

गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि *'हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।।'* अर्थात मैं जानता हूं कि भगवान सब जगह समान रूप से व्याप्त हैं, लेकिन प्रेम से वे प्रकट हो जाते हैं। स्पष्ट है ईश्वर से प्रेम से ही सब कुछ मिलेगा। इसलिए राम से प्रेम करना जीवन के लिए सर्वथा उचित है। प्रभु की प्राप्ति करके मानव जीवन बंधनों से मुक्त होता है।

– मुकेश ऋषि

Dr. Aastha Pathak

GAUMATA

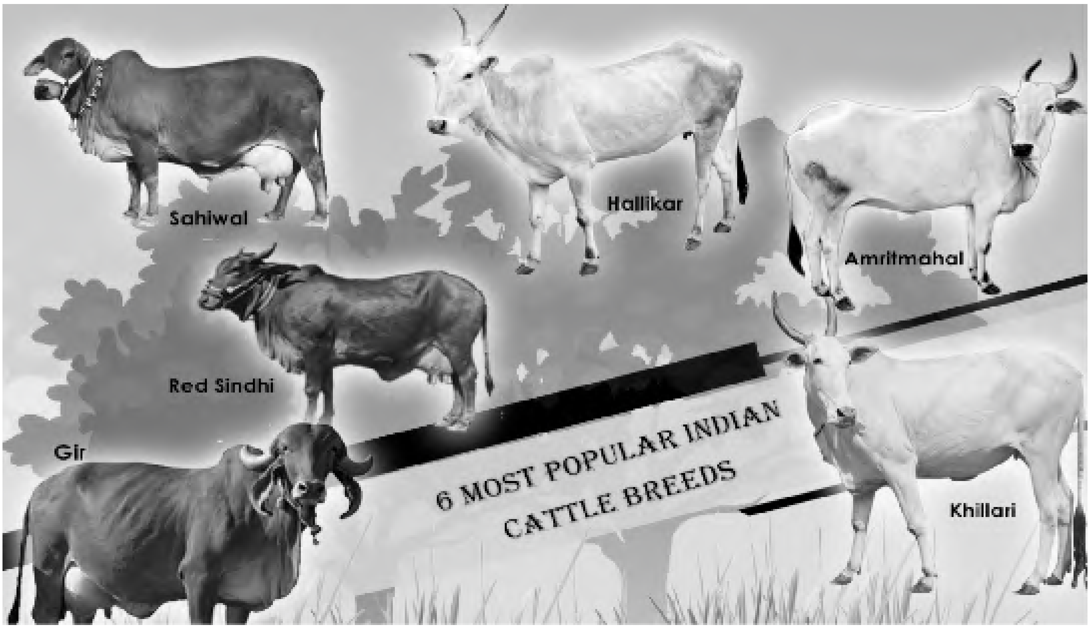

In India, cows are worshiped considering them as deities. The scientific name of cow is Bos taurus. Desi cow is not only an animal, but a unique gift of nature. Modern science also accepts the qualities of cow. There are religious beliefs in Hinduism regarding Desi cow. Under which mother cow is considered to be worship able. Along with religious beliefs, it is also a very important creature from the point of view of science. If seen from the side, many such properties have been found in its milk to cow dung which help us in fighting many diseases. The real religious meaning of the Desi cow in Hinduism is also very important.

It has been proved by scientific research that milk, curd, ghee, urine and cow dung, the five major substances obtained from cow, which are known as Panchagavya, remove the major three doshas (Vata, Pitta, Kapha) of humans.

A cow is called Mother or Gaumata in our country and according to old scriptures, it is said to be revered. Desi cow (Indian breed of cow) is the name given to cows found in the Indian sub-continent. From cow's milk to cow dung, urine everything is beneficial. These cows are very used to the weather conditions of the tropical and hot Indian terrain and can live comfortably in India. To identify an Indian cow, look for the hump of the shoulders, the skin hanging around the neck, large horns, and particularly long ears. There are many different breeds of

indigenous cows. There are 37 breeds of cows in India. Following are some of them.

Major Indian Cow Breeds

Hallikar

It is one of the dry breeds in South India. At present, most of the South Indian breeds have originated from Hallikar. Hallikar is a distinct Mysore breed of cattle found mainly in Mysore, Mandi, Bangalore, Kolar, Tumkur Hassan, and Chitradurga districts of Karnataka.

Punganur

This breed is a short-horned cattle found in Madanapali and Palamaner taluka of Chiltan district of Andhra Pradesh. They are used for agricultural purposes on light soils. This breed is almost on the verge of extinction.

Malvi (Malvi)

These Malvi bullock carts in Indore, Dewas, Ujjain Shajapur, Mandsaur district, MP are known for quick transportation and are capable of lifting heavy loads on rough roads.

Nagori (Nagori)

This, being a reputed breed, is mainly bred for the draft quality of its oxen. Along with the western breed in the Naveen district of Rajasthan, there is also in the Jodhpur district and Nokha district. Its population is declining at a remarkable rate.

Rathi (Rathi)

It is an important milch breed of cattle found in the western part of Rajasthan. Home Track is located in the middle of the Thar Desert and comprises the districts of Bikaner, Ganganagar, and Jaisalmer. These animals are different from the grey-white deer-type animals called Rathi found in the Alwar region of Rajasthan.

Red Kandhari

This breed of cattle is found in Kanpur and Nanded districts. It is also found in other districts like Ahmedpur, Parli, and Hingoli tehsils of Latur district and Parbhani district of Marathwada region.

Sahiwal

Synonyms – lamble bar, lota, mulled, montgomery, telly - This breed is one of the important dairy breeds of Zabu cattle. The original breeding tract is in Pakistan but is found along the Indo-Pak border in Firozpur and Amritsar (Punjab), Ganganagar (Rajasthan). Apart from India and Pakistan, it is also found in 17 other countries.

Khari (Kheri, Khermir, Khari, Kharigarh, Khari)

This breed is closely related to the Malvi breed and is mostly found in the Lakhimpur Khen district. The population of this breed has decreased significantly in the last few years.

Hunter (mandeshi, hunter)

This breed is known for the quick-drying abilities of its bullocks and is found in Kolhapur, Solapur, Sangli, and Satara districts of Maharashtra and Belgaum, Bijapur districts of Karnataka. The origin of this breed is from the Mallikar or Amritmahal breed of cattle.

Krishna Valley (Krishna Valley)

This breed is a heavy dry breed specially used in black cotton soils of the Krishna river

watershed. Mainly found in Solapur, Sangli, and Hunter (mandeshi, hunter) This breed is known for the quick-drying abilities of its bullocks and is found in Kolhapur, Solapur, Sangli, and Satara districts of Maharashtra and Belgaum, Bijapur districts of Karnataka. The origin of this breed is from the Mallikar or Amritmahal breed of cattle.

Krishna Valley (Krishna Valley)

This breed is a heavy dry breed specially used in black cotton soils of the Krishna river watershed. Mainly found in Solapur, Sangli, and Satara districts of Maharashtra and Bijapur districts of Karnataka.

Mewati (Mewati)

This breed of cattle is synonymous with Kosi, Mehvati. This breed is known as Mewat, which is native to Alwar in Rajasthan and Mathura in Bharatpur district, western U.P. Apart from this, it is also drunk in Faridabad and Gurgaon districts of Haryana.

Panchagavya (5 cow products)

There is a Holi meeting of milk, curd, cow ghee (ghee), cow urine, Gomay Panchagavya Ayurvedic medicine. These form a range of drugs in different remedies and when mixed with different components. These medicines have proved effective to overcome many medical problems. He has reportedly cured many chronic diseases and is the only alternative to modern medical science. These medicines do not cost much in the pocket as they are all made from cow-based products which are easily available

Desi Cow Facts

Desi Cows (Bos Indicus Cattle) are also called humped cattle or Brahman cattle which originated in Asia. Indian (Desi) cows are the only species of cow on the planet that has a hump along their backbone. A2 protein which is an essential protein for the human body is found in Desi cow milk. Indian Cow Milk has amino acids which make its proteins easier to digest. Is a rich source of B2, B3, A vitamins which help immunity. Both urine and dung of Desi cow got medicinal properties and are used in ayurvedic medical treatments. Cow dung has anti-septic, anti-radioactive, and anti-thermal properties, as well acting as naturally producing manure, pesticide, and insecticide. In Bhopal, India, 20,000 people were killed in the world's worst industrial disaster from a lethal gas leak, except those villagers whose houses were coated in cow dung. A primary source of three out of the five sacred cow by-products known as 'Panchagavya', which are essential to performing Vedic activities and which together provide anti-toxic and environmental benefits to the universe. Indian villages use cow pats drying in the sun, which are used as fuel for cooking. When a cow dies you can immerse her body in the farming land, and the land becomes more fertile. Because cows supply milk, in Indian culture, they are referred to as our mothers.

UPI
BHIM UPI Payments Accepted at
BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD
Account Number : [illegible], IFSC Code: PUNB0040710
Scan and Pay using any UPI supported Apps

गोसम्पदा पत्रिका के
सदस्य बनने के लिए
सदस्यता राशि UPI द्वारा
भुगतान कर सकते हैं

केमिकल से बंजर हो चुकी जमीन पर खिला दी हर्बल बगिया

एक उद्यमी ने कोरोनाकाल में पत्नी के साथ मिलकर गोबर से किया भूमि का उपचार

पाली (राजस्थान)। *जहां चाह, वहां राह..।* यह बात पाली के सुमेरपुर रोड पर बंजर हो चुकी भूमि पर बगिया खिलाकर एक उद्यमी ने साबित किया है। उन्होंने केमिकल से खराब हो चुकी भूमि का गोबर की खाद से उपचार किया। आज उनके बगीचे में ऐसे पेड़ व पौधे लगे हैं, जो मारवाड़ क्षेत्र में बहुत कम होते हैं। यह बगीचा कई लोगों के लिए प्रेरणा बना। अब लोगों ने अपने घरों व खाली भूमि पर पौधरोपण करना शुरू कर दिया।

सुमेरपुर रोड पर राजस्थान हैंड प्रोसेसर्स टेक्सटाइल एसोसिएशन के अध्यक्ष विनय बम्ब की फैक्ट्री थी, जिसमें पहले ब्लीच कार्य होता था। इससे भूमि खराब हो गई। ब्लीच कार्य बंद करने के बाद से भूमि खाली पड़ी थी। बम्ब को कोरोना काल में यहां बगीचा लगाने का विचार आया। उन्होंने कृषि विभाग व काजरी के अधिकारियों से सम्पर्क किया। अधिकारियों ने बम्ब को गोबर की खाद डालने व पौधरोपण करने की सलाह दी। बम्ब ने गोबर की खाद डाली और पत्नी के साथ मिलकर पौधरोपण किया। आज बगीचे में 500 किस्म के पौधे हैं।

बगीचे में लगा दिए ऐसे पौधे जो मारवाड़ क्षेत्र में बहुत कम उपजते हैं

पूरी तरह से ऑर्गेनिक

बम्ब बताते हैं कि फैक्ट्री को पुनायता में स्थान्तरित करने के बाद भूमि बंजर हो गई थी। पर्यावरण संरक्षण का ख्याल आया। इस भूमि पर पपीते के पौधे लगाए थे, कई पौधे जल भी गए, लेकिन अब पेड़ फल दे रहे हैं। बगीचे में औषधीय पौधे भी लगाए गये हैं।

बगीचे में 500 किस्म के पौधे लगाए गये

बगीचे में करीब 500 किस्म के पौधे लगाए गए हैं। इनमें अंजीर, अनार, आम, चीकू, ड्रैगन फ्रूट, केरुंदा, नींबू, नारियल, खजूर, जामुन, सीताफल, अमरुद, पपीता, शहतूत, रानी मेवा, सहजन की फली, इमली, गुंदा, आंवला, सेव बोर प्रमुख हैं। इसके अलावा मीठा नीम, एलोवेरा, लेमनग्रास, गुड़हल, तुलसी, अजवाइन, सौंफ, चंदन, बांस, गिलोय, हरसिंगार के पौधे भी लगाए गए हैं।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 अप्रैल, 2024

रामनवमी पर विशेष

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक